OM 17 EDITED_Page 1 and 2 11-11-2014 15:47 Page 8

कथा सरिता

ज्ञान की सार्थकता

संसार में ऐसे बहुसंख्यक लोग हैं जो संत-महात्माओं की वाणी सुनते हैं, किंतु उसका कोई लाभ नहीं ले पाते, क्योंकि किसी भी तरह के ज्ञान का लाभ पाने के लिए उसे व्यवहार में उतारना भी ज़रूरी है।

महात्मा बुद्ध की धर्मसभा में प्रवचन सुनने एक व्यक्ति नियमित रूप से आया करता था। उसका यह क्रम एक महीने तक चला, किंतु उसके जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। बुद्ध उपदेश देते कि लोभ, द्वेष और मोह पाप के मूल हैं, इन्हें त्यागो। किंतु वह व्यक्ति इन बुराइयों में उतना ही फंसता जाता था। बुद्ध कहते थे कि जो क्रोध करता है उससे स्वयं उसी का अहित होता है, किंतु जो क्रोध का जवाब क्रोध से नहीं देता, वह एक भारी युद्ध जीत लेता है। लेकिन उस व्यक्ति का उग्र स्वभाव तो उग्रतर होता जा रहा था। हैरान-परेशान होकर वह बुद्ध के पास गया। उन्हें प्रणाम कर बोला - स्वामी! एक माह से मैं आपके प्रवचन सुन रहा हूँ, किंतु उनका तनिक भी असर मेरे आचरण पर नहीं पड़ा। मैं बहुत परेशान हूँ। मुझे क्या करना चाहिए?

बुद्ध उसकी बात सुनकर बोले - तुम कहां के रहने वाले हो? उसने कहा - श्रावस्ती का। बुद्ध ने अगला प्रश्न किया - यहां राजगृह से श्रावस्ती कितनी दूर है? उसने अनुमान लगाकर बता दिया। बुद्ध ने पूछा - यहां से वहां तक कैसे जाते हो? उसने कहा - सवारी से। बुद्ध ने पुन: जिज्ञासा प्रकट की - कितना समय लगता है? उस व्यक्ति ने हिसाब लगाकर बता दिया। बुद्ध ने प्रश्न उपस्थित किया - अब यह बताओ कि यहां बैठे-बैठे राजगृह पहुंच सकते हो? उसने बोला - यह कैसे हो सकता है? वहां पहुंचने के लिए तो चलना होगा। तब बुद्ध ने बड़े प्रेम से उसे समझाया - तुमने सही कहा। चलने पर ही मंज़िल तक पहुंचा जा सकता है।

इसी तरह अच्छी बातों का असर तभी पड़ता है जब उन पर अमल किया जाए। ज्ञान के अनुसार कर्म न होने पर वह व्यर्थ है। उस व्यक्ति को अपनी गलती समझ में आ गई और उसने तदनुरूप सुधार कर लिया जिससे उसका जीवन सदाचारी बन गया।

बड़ा आश्रम

एक राजा था। उसका राज्य बड़ा था। एक दिन राजा ने सोचा-मुझे गुरु बनाना है, पर मेरा गुरु वही बनेगा, जिसका आश्रम सबसे बड़ा होगा। उसने पूरे राज्य में मुनादी करवा दी-जिसके पास सबसे बड़ा आश्रम है, वह राजदरबार में आए। राजा उसे अपना गुरु बनाएगा। घोषणा सुनकर कई सन्यासी राजा के दरबार में पहुँचे। सन्यासी अपना-अपना आश्रम बड़ा बताने लगे। एक ने कहा-मेरे पास सौ एकड़ जमीन का आश्रम है। दूसरे ने कहा-मेरे पास तो हज़ार एकड़ का आश्रम है। इस तरह सभी ने अपनी कह दी। राजा ने देखा कि एक सन्यासी कोने में चुपचाप खड़ा था। राजा ने उससे पूछा-आप कुछ नहीं बोल रहे हैं। आपका आश्रम कितना बड़ा है? सन्यासी बोला-मैंने यहाँ इतने बड़े-बड़े आश्रमों के बारे में सुना। पर मैं अपना आश्रम आपको आँखों से दिखाना चाहता हूँ। राजा ने पूछा-कहाँ है आपका आश्रम? सन्यासी बोला-आप मेरे साथ चलिए। राजा सन्यासी के साथ चलने को तैयार हो गया।

सन्यासी राजा को घने जंगल में ले गया। वहाँ एक पीपल का पेड़ आया। उस पेड़ के नीचे आसन लगाकर सन्यासी बैठ गया। राजा बोला-अरे, आप तो यहाँ आकर बैठ गये। आपने अपना आश्रम तो मुझे दिखाया ही नहीं है। सन्यासी बोला-यही तो है, मेरा आश्रम। राजा बोला-मुझे तो यहाँ कुछ भी नज़र नहीं आ रहा है। सन्यासी बोला-राजन्, मेरे ऊपर आसमान है और नीचे जमीन है। क्या इससे बड़ा कोई आश्रम हो सकता है? धरती से अंबर तक का साम्राज्य उसी का होता है, जिसके पास कुछ नहीं होता। मेरे पास कुछ नहीं होकर भी सब कुछ है। राजा सन्यासी की बात सुनकर खुश हुआ और उसे अपना गुरु बना लिया।

परोपकारी

यमन देश में टाय नाम का कबीला था। कबीले के सरदार का इकलौता बेटा हातिम हमेशा लोगों की भलाई में लगा रहता था। वह किसी की भी मदद के तैयार हो जाता था। हातिम के व्यवहार की चर्चा दूर-दूर तक होने लगी। लोगों ने उसका नाम परोपकारी रख दिया।

यमन देश का बादशाह भी काफी दरियादिल था। लोग उसे भी परोपकारी कहते थे। अपने से ज्यादा हातिम की चर्चा सुनकर, वह परेशान हो जाता था। एक बार बादशाह ने भोज का आयोजन किया। भोज के दौरान सभी ने बादशाह के परोपकारी स्वभाव की बहुत तारीफ की। लेकिन एक आदमी ने हातिम को परोपकारी कह दिया। बस, फिर क्या था! बादशाह गुस्से में आगबबूला होकर बोला-'मैं आदेश देता हूँ कि हातिम को खत्म करने का काम तुम्हें ही करना है। इसके बदले मैं तुम्हें बहुत सारी धन-दौलत दूंगा।' एक तो बादशाह का आदेश था, दूसरा धन-दौलत का लालच। वह हातिम को मारने के इरादे से चल पड़ा। लंबा सफर तय करके, वह तलवार लेकर कबीले में पहुँचा। वहाँ उसे हातिम मिला। वह हातिम को नहीं पहचानता था। हातिम ने जब सुना कि वह लंबा सफर तय करके आया है और थका हुआ है, तो वह उसे अपने घर ले गया। उसे हर सुख-सुविधा दी। रात को भोजन कराकर गरम बिस्तर सोने के लिए दिया।

सुबह वह आदमी अपनी तलवार उठाकर जाने लगा। हातिम को धन्यवाद कहकर वह बोला-'तुमने मेरा बहुत आदर-सत्कार किया। अब एक मदद और कर दो। मुझे परोपकारी हातिम का पता बता दो।' 'क्या काम है तुम्हें उससे?'-हातिम ने हैरान होकर पूछा। 'दरअसल तुमसे कुछ छिपाऊंगा नहीं। यमन देश के बादशाह को सभी परोपकारी कहकर बुलाते हैं। बादशाह नहीं चाहते कि उनके अलावा किसी और को कोई परोपकारी कहे। इसीलिए उन्होंने मुझे हातिम को मारने का आदेश दिया है। यदि मैंने उसे मार दिया, तो वह मुझे बहुत सा धन-धान्य देंगे, जिससे मैं आराम से जीवन जी सकूंगा।' हातिम ने एक पल की भी देरी किये बिना उस आदमी के सामने सिर झुका दिया। बोला-'तुम बेझिझक मुझे मार दो, क्योंकि मैं ही हातिम हूँ। मुझे मारकर तुम्हारे बादशाह को सुकून मिल जायेगा और तुम्हें सुखी जीवन।'

यह सुनकर वह आदमी घबरा गया। उस आदमी के हाथ से तलवार जमीन पर गिर गई। वह हातिम के पैरों में गिरकर माफी मांगने लगा-'तुम्ही असली परोपकारी हो। मैं तुम्हें सलाम करता हूँ। हो सके, तो मुझे माफ कर दो।' वह चेहरे पर पश्चाताप के भाव लेकर चला गया। हातिम ने उसे काफी रोकने की कोशिश की, परंतु वह बिना रुके दौड़ता गया और बादशाह के दरबार में जाकर ही रुका। फिर वह गिड़गिड़ाकर बोला-'बादशाह सलामत! आप चाहें, तो मुझे जान से मरवा दीजिए, परंतु मैं हातिम को नहीं मार सकूंगा, क्योंकि वह हकीकत में परोपकारी है।' फिर उसने अपने साथ घटी सारी घटना कह सुनाई।

बादशाह ने जब सच्चाई सुनी, तो उसके मुँह से एकाएक निकला-हातिम! तुम वाकयी में परोपकारी हो। बादशाह बोला-असली परोपकारी वह है, जो दूसरों की सुख-सुविधा के लिए अपनी जान की बाज़ी लगाने को तैयार है।' बादशाह ने उस आदमी को बहुत-सा धन दिया। वह खुश होकर चला गया।

आध्यात्मिक साधना... - पेज 10 का शेष

किसी एक महान गुण - प्रेम, सहनशीलता, दया आदि के विकास का प्रयत्न करो।

10. किस दोष को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं?

यदि आप बहुत ऊँचाई से देखें तो आप स्पष्ट समझ सकेंगे कि आपके कौन से कर्म या विचार आप को मिथ्या जगत के सागर में गले में बंधे पत्थर के समान बोझ बनकर डुबा रहे हैं। आप रस्सी को तुरन्त काट दीजिये, पत्थर को डूब जाने दीजिए और आप स्वयं जल की सतह पर उठकर और तैर कर किनारे आ जाइये। इसलिए समस्या को समझकर उसका सही निदान खोजने की आवश्यकता है।

गुड़गांव। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए दादी हृदयमोहिनी, सुभाष घई,प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक, शमीना शफीक, ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. आशा तथा अन्य।

फर्रुखाबाद-उ.प्र.। स्वामी कुलाधिपति जगतगुरु राजभद्राचार्य जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मंजु। साथ हैं ब्र.कु. गिरजा, मनीष मिश्रा, अनिल कुमार त्रिपाठी तथा अन्य।

डिग्गी-राजापार्क जयपुर। एस.डी.एम. देवराम सुथार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. जीत। साथ हैं अन्य भाई बहन।

चरखी दादरी। 'स्वर्णिम भारत का आधार स्वच्छ ग्रामीण जीवन' विषयक कार्यक्रम का कैंडल लाइटिंग के द्वारा उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. अमीरचंद, सतबीर कादयान,बाढ़डा,बी.डी.पी.ओ., डॉ. दलीप सांगवान,पूर्व निदेशक,पशु पालन विभाग, ब्र.कु. प्रेमलता, ब्र.कु. वसुधा,कादमा तथा अन्य।

भवानी नगर-जयपुर। झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् महापौर ज्योति खण्डेलवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हेमा तथा उद्योगपति ब्र.कु. मदनलाल शर्मा। साथ हैं अन्य।

मंचर-पुणे। महात्मा गांधी विद्यालय व जूनियर कॉलेज में 'नैतिक शिक्षा आज की नितांत ज़रूरत' विषय पर मागदर्शन करते हुए ब्र.कु. बालू।